भाषा विज्ञान की शाखाएँ

भाषा विज्ञान पूर्ण रूप से विकसित, पल्लवित तथा पुष्पित वह वृक्ष है जिसकी चार मुख्य शाखाएँ है --
ध्वनि विज्ञान
रूप विज्ञान
अर्थ विज्ञान
वाक्य विज्ञान

सामान्यतः भाषाविज्ञान की उपर्युक्त चार शाखाएँ ही मानी जाती हैं। भाषाविज्ञान की शाखाओं के संबंध में भाषावैज्ञानिकों में मतभेद है परंतु सभी ने ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, अर्थ विज्ञान, वाक्य विज्ञान इन चार शाखाओं को ही अधिक मान्यता है --

ध्वनि विज्ञान

भाषा के अंदर ध्वनि का बहुत महत्व है, वस्तुतः ध्वनि भाषा की वह लघुतम इकाई है जिसका पुन: विभाजन नहीं किया जा सकता, ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत उन्हीं ध्वनियों का अध्ययन होता है जिनके संयोग से भाषा का निर्माण होता है।

ध्वनियों के साथ-साथ इनके उच्चारण स्थान का भी अध्ययन ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत होता है। ध्वनियों का उच्चारण जिन अंगों से होता है उन्हें समग्र रुप में 'वाग्यंत्र' कहते हैं। ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत 'वाग्यंत्र' की रचना, इसके विभिन्न अंगों के कार्य आदि का अध्ययन होता है ।'वाग्यंत्र' के कई अंग होते है।
इन अंगों से विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण होता है। जैसे ओष्ठ्य से 'प' वर्ग की ध्वनियों का, कंठ्य अंग से ' क' वर्ग की ध्वनियों का उच्चारण होता है। ध्वनि विज्ञान के अंदर इन ध्वनियों के साथ-साथ ध्वनि उच्चारण के स्थानों का भी सम्यक अध्ययन होता है।

'वाग्यंत्र' के साथ-साथ ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत ध्वनियों के अंदर जो विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होते हैं, उनके कारणों और दिशाओं का भी अध्ययन ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत होता है। ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत ध्वनि संबंधी एक और महत्वपूर्ण विषय का अध्ययन होता है जिसका नाम 'ध्वनि नियम' है। इन नियमों का संबंध किस भाषा से है, किस काल विशेष से है आदि का अध्ययन इसमें होता है।

रूप विज्ञान

रूप विज्ञान भी भाषा विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इस रुप विज्ञान को हम दो भागों में बांट सकते हैं –

1) शब्द विज्ञान
2) पद विज्ञान

शब्द विज्ञान

भाषा विज्ञान के अंतर्गत शब्द का विशेष महत्व होता है। भाषा के अंतर्गत शब्दों का प्रयोग दो रूपों में होता है। एक तो सामान्य शब्द बोलचाल की भाषा में काम आते हैं और दूसरे परिष्कृत शब्द है जो साहित्यिक भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। इन सभी शब्दों का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। इसके अंदर शब्द निर्माण की प्रक्रिया, शब्द के विविध भेद, शब्दों में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन होता है।

किसी भी विकसित भाषा का अपना एक शब्द समूह होता है। इसमें विविध प्रकार के शब्द होते हैं। उदाहरणार्थ– हिंदी भाषा के शब्द समूह में तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ विदेशी शब्दों का भी प्रयोग होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शब्दों की रचना के साथ-साथ उनमें होने वाले परिवर्तनों का भी अध्ययन होता है तथा परिवर्तनों का ही नहीं उनके कारणों का भी अध्ययन होता है। इस प्रकार शब्द विज्ञान भाषा विज्ञान की महत्वपूर्ण उप-शाखा है।

पद विज्ञान

ध्वनि भाषा की लघुतम इकाई है। ध्वनियों के समूह से शब्द का निर्माण होता है तथा शब्दों के समूह से वाक्य का और सार्थक वाक्यों में समुच्चय का नाम 'भाषा' है परंतु शब्द तथा वाक्य के मध्य रचना प्रक्रिया की दृष्टि से एक और सीढी है जिसका नाम 'पद' है।

'पद' शब्द का सीधा अर्थ है' पैर'। पैर का काम है 'चलना'। एक प्रकार से हम कह सकते हैं कि जब मूल शब्द वाक्य में चलने लगता है अर्थात एक निश्चित अर्थ देने लगता है तब पद बन जाता है। इस प्रकार वाक्य केवल शब्दों का समूह मात्र ही नहीं होता है अपितु उन शब्दों में एक निश्चित अर्थ के बोध के लिए, परस्पर संबंध भी स्थापित होना चाहिए। इसके लिए शब्दों में प्रत्यय, विभक्तियां आदि जोड़ते हैं। जब मूल शब्द योग से विकार उत्पन्न हो जाता है तब वे पद कहलाते हैं। उदाहरण के लिए-- 'राम', 'मोहन', 'आम', 'देना' इन चार शब्दों को ले सकते हैं। इन शब्दों का अपना एक निश्चित अर्थ है जो मूलार्थ है। यदि बिना कोई परिवर्तन लाए ही इन शब्दों से हम वाक्य बनाना चाहे तो असफल रहेंगे और यह स्पष्ट करने में भी असमर्थ रहेंगे की इन चार शब्दों का पारस्परिक संबंध क्या है? परंतु इन शब्दों में थोड़ा सा विकार लाकर इस तरह लिख सकते हैं –

' मोहन ने राम को आम दिया।'

यह पूर्ण वाक्य बन गया और अर्थ भी देता है। राम, मोहन आम, देना जैसे मूल शब्द अर्थ तत्व कहलाते हैं तथा 'ने', 'को' जैसे विभक्ति चिन्ह तथा 'आ ' जैसे प्रत्यय संबंध तत्व कहलाते हैं इस प्रकार अर्थ तत्व तथा संबंध तत्व के योग से बना शब्द ' पद' कहलाता है।

'पद' विज्ञान के अंतर्गत इन विविध संबंध तत्वों का अध्ययन होता है जो पद निर्माण में सहायक होते हैं। विविध संबंध तत्व उनके विभिन्न कार्य, उनका परस्पर संबंध तथा वैज्ञानिक अध्ययन पद विज्ञान के अंतर्गत होता है।

वाक्य विज्ञान

ध्वनि विज्ञान और रूप विज्ञान के पश्चात भाषा विज्ञान की तीसरी महत्वपूर्ण शाखा वाक्य विज्ञान है। इस शाखा के अंतर्गत वाक्य की संरचना, उसके आवश्यक उपकरण आदि का मनोवैज्ञानिक और सूक्ष्म अध्ययन होता है। यह अध्ययन करते समय भाषा में वाक्य प्रयोग की स्थिति और उसके अर्थ पर भी विचार किया जाता है।

वस्तुतः विविध पदों से वाक्य का निर्माण होता है। वाक्य विज्ञान के अंतर्गत वाक्य का पद विन्यास संबंधी अध्ययन एवं विवेचन होता है। वाक्य सार्थक होता है और सार्थक वाक्य में भाषा की रचना होती है। इस प्रकार किसी भी वाक्य के अंदर दो मुख्य बातें निहित होती हैं। जिन्हे हम उद्देश्य और विधेय के रूप में जान सकते हैं। वाक्य के अंदर जो भाव विशेष निहित होता है अर्थात जिसके विषय में वाक्य के द्वारा कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं। जैसे- ' राम पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य में 'राम' उद्देश्य है और 'पुस्तक पढ़ता है' यह विधेयक है। इन दोनों का सम्यक अध्ययन वाक्य के अंतर्गत किया जाता है जिससे वाक्य की संरचना और उसके अर्थ विशेष को समझने में सरलता रहती है।

वाक्य विज्ञान के अंतर्गत वाक्य के विभिन्न भेदों का भी अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार वाक्य विज्ञान के अंतर्गत वाक्य की रचना, पदों का महत्व, पदान्वय, वाक्य के भेद आदि का सम्यक सूक्ष्म और पूर्ण अध्ययन एवं विवेचन होता है।

अर्थ विज्ञान – अर्थ शब्द की आत्मा होती हैं। जिस प्रकार आत्मा के निकल जाने से शरीर व्यर्थ हो जाता है उसी प्रकार अर्थ के बिना शब्द का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।

अर्थ विज्ञान के अंतर्गत शब्द के अर्थ परिवर्तन की विभिन्न दिशाओं का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में तीन बातें विशेष रूप से ध्यान में रखी जाती है –

1] अर्थ संकोच
2] अर्थ विस्तार
3] अर्थादेश

अर्थ संकोच का तात्पर्य यह है कि पहले से प्रचलित किसी शब्द के अर्थ में न्यूनता आ जाना। इस प्रकार किसी शब्द का व्यापक अर्थ जहां सिमटकर छोटा हो जाता है उसे अर्थ संकोच कहते हैं।

उदा. – अंग्रेजी के deer तथा संस्कृत के 'मृग' शब्द का प्रयोग पहले 'पशु' के लिए होता था। परंतु क्रमशः वर्तमान अंग्रेजी तथा हिंदी में इसका प्रयोग 'हरिण के लिए हो रहा है।

अर्थ विस्तार का तात्पर्य है किसी शब्द का अर्थ सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तृत हो जाता है तब उसे अर्थ विस्तार कहते हैं। भाषा में अर्थ विस्तार के उदाहरण अधिक नहीं मिलते।

उदा– 'अभ्यास' शब्द का प्रयोग पहले केवल बाण फेंकने के अभ्यास के लिए होता था परंतु अब हर अच्छे बुरे कार्यों के लिए अभ्यास शब्द का प्रयोग होता है। इसी प्रकार 'स्याह' शब्द का अर्थ 'काला' है। जिससे 'स्याही' शब्द बना है क्योंकि पहले लोग काले रंग से लिखते थे परंतु अब लाल, हरी सभी रंगो के लिए स्याही शब्द का प्रयोग होने लगा है।

अर्थ विज्ञान के अंतर्गत शब्दों के अर्थादेश का भी अध्ययन किया जाता है। कभी-कभी एक शब्द के प्रधान अर्थ के साथ गौण अर्थ भी चलने लगते हैं। फिर धीरे-धीरे प्रधान अर्थ लुप्त हो जाता है और गौण अर्थ ही चलने लगता है। इसी को अर्थादेश कहते हैं। जैसे 'वर' का अर्थ 'श्रेष्ठ' था पर अब 'दूल्हे' के लिए प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार 'दुल्हा' शब्द का मूल अर्थ था 'जो जल्द न मिले' अर्थात 'दुर्लभ' परंतु अब वह 'वर' के नये अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है।

इस प्रकार अर्थ विज्ञान में शब्द का, अर्थ का, शब्द और अर्थ के तात्पर्य का, उनका स्वरूप, पारस्परिक संबंध आदि का अध्ययन किया जाता है।

इसके अतिरिक्त भाषा विज्ञान में अन्य विषयों का भी समावेश हो गया है जो निम्नानुसार है –

शैली विज्ञान

शैली विज्ञान में शैली का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। साहित्य की रचनात्मक कृतियों का शैली विज्ञान में वस्तुनिष्ठ अध्ययन होता है। शैली का अर्थ है - 'काम करने का ढंग' । साहित्य के क्षेत्र में शैली का अर्थ होता है - 'अभिव्यक्ति शैली' या 'प्रयोग शैली' । शैली विज्ञान अंग्रेजी के स्टाइलिस्टिक्स (Stylistics) का अनुवाद है। शैली विज्ञान भाषा विज्ञान एवं साहित्यशास्त्र दोनों की सहायता तो लेता है फिर भी दोनों से अलग स्वतंत्र विज्ञान है। शैली विज्ञान में भाषा शैली का अध्ययन साहित्य शास्त्र के सिद्धतों के आधारपर किया जाता है। इसमें रस,अलंकार,वक्रोक्ति, ध्वनि, रीति, शब्दशक्ति, बिंब, प्रतीक आदि आते है। तथा शैली विज्ञान के अंतर्गत भाषा शैली का अध्ययन भाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा शैली का अध्ययन भाषा विज्ञान के सिद्धांतों के आधारपर किया जाता है। इसमें भाषा की प्रकृति, और संरचना के अनुशीलन को महत्त्व दिया जाता है।

शैली विज्ञान में प्रभाव की दृष्टि से ध्वनि, रूप,शब्द,वाक्य आदि पर विचार किया जाता है। इन आधारों पर शैली विज्ञान के निम्न भेद होते है –

1] ध्वनिय शैली- विज्ञान
2] रूपीय शैली- विज्ञान
3] शब्दीय शैली- विज्ञान
4] वाक्यीय शैली- विज्ञान
5] अर्थीय शैली- विज्ञान

इसमें यह विचार किया जाता है कि साहित्य रचना में प्रभाव निर्माण करने के लिए किन ध्वनियों, रूपों, शब्दों, वाक्यों, या अर्थों आदि को छोड़ा जाए या किन्हे प्रयुक्त किया जाए। अर्थात इसमें चयन पद्धति, एवं उसके आधारभूत सिद्धतों पर विचार किया जाता है।

कोश विज्ञान

भाषा विज्ञान की एक शाखा के रूप में कोश विज्ञान को भी स्वीकृति मिली है। वैसे इसमें शब्दों का ही अध्ययन होता है इसलिए इसे शब्द विज्ञान की शाखा ही मानना उचित होगा। कोष विज्ञान तो कोश बनाने का विज्ञान है। इसमें उन सिद्धांतों का विवेचन किया जाता है जिसके आधार पर कोश बनते हैं। भाषा विज्ञान की अन्य शाखाओं की भांति कोश निर्माण भी सबसे पहले अपने प्रारंभिक रूप में भारत में ही विकसित हुआ। लगभग 1000 इ. पूर्व निघंटुओं की रचना हुई । तब से लेकर 1000 ई. तक सैकड़ों कोश लिखे गए। अंग्रेजी कोशो का इतिहास 16 वीं सदी के अंतिम चरण से प्रारंभ होता है। यद्यपि अब वे संसार मेंसंभावतः सबसे आगे है।

कोशों के मूलतः तीन प्रकार होते हैं–

1] व्यक्ति कोश – किसी एक व्यक्ति द्वारा अपने साहित्य में प्रयुक्त शब्दों का कोई कोई व्यक्ति कोश कहलाता है। तुलसीदास सूरदास कालिदास शेक्सपियर मिल्टन आदि कोश इस प्रकार के हैं।

2] पुस्तककोश – यह कोश केवल एक पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों का होता है। जैसे - बाइबल कोश, कुरान कोश। हिंदी में इस प्रकार का एक रामचरितमानस कोश बहुत पहले बना था।

3] भाषा कोष – इस प्रकार के कोश एक भाषा के हो सकते हैं या एक से अधिक भाषाओं के भी हो सकते हैं। एक भाषा के कोश जिनमें अर्थ उसी भाषा से उसी भाषा में दिए हो जैसे – हिंदी-हिंदी या अंग्रेजी-अंग्रेजी या जिनमें अर्थ एक भाषा से दूसरी भाषा में हो । जैसे हिंदी-अंग्रेजी, हिंदी-मराठी आदि।

इसके अलावा पारिभाषिक कोश पर्याय कोश, मुहावरा, लोकोक्ति, कोश आदि प्रकार के कोश भी बने हैं।

इन कोष विज्ञानों के अंतर्गत कोष निर्माण की क्या प्रक्रिया है? शब्द की व्युत्पत्ति क्या है? शब्द के अर्थों का निर्धारण कैसे होता है? शब्दों को कोश में किस क्रम में रखा जाना चाहिए? आदि बातों का अध्ययन होता है।

अनुवाद विज्ञान

अनुवाद शब्द 'वद' धातु से बना है जिसका अर्थ है, 'बोलना' । वद धातु में 'अनु' प्रत्यय लगाने से अनुवाद शब्द बना है। 'अनु' का अर्थ है, पीछे से, बाद में। अनुवाद का अर्थ है किसी के कहने के बाद कहना, बोलना अथवा पुनः कथन। अनुवाद में हम एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहते हैं। अर्थात एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है। इस तरह अनुवाद का कार्य है एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना।

अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखा माना जाता है। इसी अर्थ में उसे विज्ञान भी माना जाता है। अनुवाद करने के पिर्व की चिंतन प्रक्रिया तुलनात्मक अथवा व्यतिरेकी भाषा विज्ञान पर पूर्णतः आधारित होती है। इस दृष्टि से अनुवाद को विज्ञान मानना योग्य ही है। इसमें अनुवाद प्रक्रिया में पहले स्त्रोत भाषा के पाठय का वैज्ञानिक पद्धति से विकोडीकरण अर्थात विश्लेषण किया जाता है। उसके बाद स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का वैज्ञानिक पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद प्राप्त होनेवाली समानताओं और विशेषताओं का पता लगाया जाता है। अनुवाद की यह प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक है। इसके अभाव में अनुवाद संभव ही नहीं।

अनुवाद की भाषा वैज्ञानिक समस्याओं का समाधान भाषा विज्ञान के परिप्रेक्ष में वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है। इन भाषा वैज्ञानिक समस्याओं में अर्थपरक समस्याओं ,शब्दावली की समस्याओं, लिप्यंकन की समस्याओं तथा व्याकरणिक समस्याओं का समाधान खोजा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1) भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा,किताब महलएजेंसीज पटना, संस्करण- 2002
2) देवेन्द्रनाथ शर्मा,दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली, संस्करण 2001
3) डॉ. मिथिलेश शर्मा और अन्य भाषा के विविध रूप और संचार माध्यम,विनय प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2003

by Dr. Sangita Chitrakoti